माया उन्हें सत्पथ से भ्रष्ट कर देती है,—वे भी श्रीभगवान् की अवज्ञा कर बैठते हैं।

वर्तमान काल में गीता के विद्वानों में भी बहुत से **माययापहृत ज्ञान** मूढ़ हैं। गीता में सीधी सरल भाषा में बार-बार कहा गया है कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं। वे असमौर्ध्व हैं, अर्थात् उनके समान या उनसे अधिक कोई नहीं है, क्योंकि वे सब मनुष्यों के पिता—ब्रह्मा के भी पिता हैं। ब्रह्मा के ही नहीं, वे तो सम्पूर्ण जीव-योनियों के जन्मदाता हैं। वे ही निर्विशेष ब्रह्म के आश्रय हैं, और जीवमात्र के अन्तर्यामी परमात्मा उन्हीं का अंश है। वे सबके स्रोत हैं, अतः सभी को उनके शरणागत ही जाना चाहिए। इन स्पष्ट वाक्यों के होते हुए भी **माययापहृत ज्ञान** मूढ़ श्रीभगवान् की साधारण मनुष्य समझकर उनका उपहास किया करते हैं। वे नहीं जानते हैं कि महाभाग मनुष्य-शरीर श्रीभगवान् के नित्य-चिन्मय श्रीविग्रह के अनुसार ही रचा गया है।

माययापहृत ज्ञान श्रेणी के मूढ़ों ने परम्परा के बाहर गीता की जो भी अप्रामाणिक व्याख्याएँ की हैं, वे सब ज्ञान के पथ में बाधक सिद्ध होती हैं। मूढ़ व्याख्याकार न तो स्वयं श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की शरण लेते हैं और न दूसरों को ही ऐसा करने की शिक्षा देते हैं।

(४) अन्तिम कोटि के दुष्ट **आसुरभावाश्रित**—आसुरी स्वभाव धारी हैं। यह श्रेणी खुले रूप में अनीश्वरवादी है। इस कोटि के मनुष्य रूपधारी असुरों का तर्क हैं कि परमेश्वर इस प्राकृत-जगत् में कभी अवतरित नहीं हो सकते। परन्तु अपने इस तर्क को वे किसी ठोस प्रमाण के आधार पर सिद्ध नहीं कर पाते। दूसरे श्रीभगवान् को निर्विशेष ब्रह्म के आधीन कहते हैं, यद्यपि गीता में इससे ठीक विपरीत वर्णन है। श्रीभगवान् से ईर्ष्यावश ये अनीश्वरवादी अनेक कपोलकल्पित झूठे अवतारों को प्रकट करते हैं। जिनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य भगवान् की निन्दा करना है, ऐसे ये दुर्जन श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की शरण कभी नहीं ले सकते।

भक्तराज श्रीयामनाचार्य का उद्गार है, 'प्रभो! आप विलक्षण गुण, रूप, लीला से विभूषित हैं। सब शास्त्रों से आपका विशुद्ध सत्त्वमय विग्रह प्रमाणित है और दैवी गुणशील ज्ञानी आचार्य भी आप का जय-जयकार करते हैं। फिर भी आसुरभाव रखने वाले आपको जानने में सफल नहीं होते।'

अस्तु, (१) मूढ़, (२) नराधम, (३) भ्रमित मनोधर्मी तथा (४) अनीश्वर-वादी—ये चारों प्रकार के पापी सब शास्त्रों एवं आचार्यों की सम्मति के विरुद्ध श्रीभगवान् के चरणकमलों की शरण में कभी नहीं आते।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।।१६।।

चतुर्विधाः=चार प्रकार के; **भजन्ते**=सेवा करते हैं; **माम्**=मेरी; **जनाः**=मनुष्य; **सुकृतिनः**=पुण्यात्मा; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **आर्तः**=विपदाग्रस्त; **जिज्ञासुः**=ज्ञान का